Rise of Hitler and Nazism (Part-2)

FOR P.G. SEM-II,CC-6,UNIT-2

4. **वाइमर गणराज्य से असंतोष:** हिटलर के अभ्युदय का एक कारण जर्मन जनता का वाइमर गणतंत्र के प्रति असंतोष था। प्रथम विश्व युद्ध के अंतिम दिनों में जर्मनी में गणतंत्र की स्थापना हुई थी किंतु यह गणतंत्र जर्मन जनता का सम्मान पाने में असफल रहा ।वस्तुतः जर्मनी की जनता वाइमर गणतंत्र को अपनी पराजय और अपमान का प्रतीक मानती थी क्योंकि गणतंत्र के नेताओं ने ही वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर किए तथा मुआवजा देने की बात स्वीकार की। इस दृष्टि से गणतंत्र के नेता राष्ट्रीय शर्म और अपमान के प्रतीक थे। उनके रहते वर्साय की संधि द्वारा थोपी गई शर्तों को खत्म नहीं किया जा सकता। इसके अलावे 1930 के निर्वाचन में 24 पार्टियों ने भाग लिया था। अनेक विरोधी पार्टी होने के कारण कोई भी कार्य शीध्रता पूर्वक नहीं हो पाता था ।बहुत समय व्यर्थ के वाद- विवाद में नष्ट हो जाता था। ऐसे में जर्मनी की जनता ने गणतंत्र के विरुद्ध हिटलर और नाजी पार्टी का साथ दिया।

5. **यहूदी विरोधी नीति:** जर्मनी में यहूदियों की संख्या जर्मन जनसंख्या के मुकाबले नगण्य थी परंतु वे व्यापार, व्यवसाय, राजनीति में अग्रणी थे ।यहूदी वर्ग जर्मनी का वैभवशाली वर्ग था, साधारण जनता इन्हें शोषक समझ कर घृणा करती थी। प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की पराजय को जर्मन जनता यहूदियों के विश्वासघात से जोड़कर देखती थी फलतः यहूदी विरोधी भावनाएं वहां व्याप्त थी ।हिटलर ने इस भावना को और उग्र किया। हिटलर ने प्रचार किया कि देश के व्यापार और उद्योग पर नियंत्रण रखने के बावजूद इन यहूदियों ने जर्मनी की सुरक्षा और सेना की कोई मदद नहीं की अतः ऐसे यहूदियों को जर्मनी से भगाना हिटलर ने अपना लक्ष्य घोषित किया तथा जर्मन जनता की सहानुभूति प्राप्त की।

6. **हिटलर का व्यक्तित्व तथा प्रचार कार्यः** हिटलर का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था। वह एक कुशल तथा प्रभावशाली वक्ता था। वह मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञाता था और नाटकीयता उसमें कूट- कूट कर भरी थी। जनता को प्रभावित करने के लिए उसने प्रचार के सभी साधनों का पूरा उपयोग किया। **गोबेल्स** उसका प्रमुख प्रचारक था जिसका सूत्र वाक्य था **झूठी बात को इतना दुहराओं कि वह सत्य बन जाए।** उसने प्रचार के समस्त साधनों पर अधिकार कर लिया था और उसके द्वारा एकमात्र नात्सी पार्टी के सिद्धांतों का ही प्रचार किया जाता था। हिटलर का व्यक्तित्व तथा उसके भाषण का जादू उसके उत्थान में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुआ।

7. **आतंक पूर्ण कार्यः** नात्सी ने अपने प्रचार करने तथा विरोधियों के दमन के लिए आतंक पूर्ण कार्य किए ।सरकार उनकी इन कार्यों को न रोक सकी। अतः उनका उत्साह बढ़ता गया ।इस प्रकार शक्ति तथा आतंक पूर्ण कार्यों से भी उन्होंने अपना प्रचार किया।

8. **जर्मन जनता की सैन्य मनोवृति:** जर्मन जनता स्वभाव से ही सैन्य मनोवृति रखने वाली थी ।वह अनुशासन प्रिय महान फ्रेडरिक, बिस्मार्क तथा विलियम कैसर जैसे वीर नायकों की पूजा करने वाली थी ।गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली उसे पसंद नहीं थी ।वह एकतंत्र को पसंद करती थी और हिटलर में यह सब विशेषताएं थी अतः जर्मनी की जनता ने हिटलर का हार्दिक स्वागत किया

9. **नव युवकों द्वारा समर्थन:** जर्मनी में बेकारी की समस्या बहुत अधिक थी। स्कूलों तथा कॉलेज से निकलने वाले लोगों को रोजगार नहीं मिल रहे थे। इससे देश के अधिकांश लोगों का भविष्य अंधकार में था। नात्सी पार्टी उन्हें रोजगार देने का आश्वासन दे रही थी अतः उन्होंने हिटलर का समर्थन किया।

10. **विपक्षियों की निर्बलता:** नात्सियों के विरोधी अनेक वर्गों में बँटे थे । उन्होंने मिलकर नात्सियों का विरोध नहीं किया। साम्यवादी यह सोचते रहे कि नात्सियों द्वारा वर्तमान सत्ता का अंत करने पर वे शीघ्रता से देश का शासन अपने हाथ में ले लेंगे ।सोशल डेमोक्रेट ने तनिक भी विरोध नहीं किया ।इसी प्रकार अन्य पार्टियां भी तटस्थ रही। विपक्षियों की निर्बलता का लाभ उठाकर नात्सी पार्टी ने समस्त सत्ता अपने हाथों में केंद्रित कर ली।

11. **वाइमर संविधान की कमियां:** विश्व युद्ध के पश्चात वाइमर नामक स्थान पर जर्मनी के लिए संविधान बनाया गया। संविधान में निहित सीमाओं का फायदा उठाकर नाजी पार्टी सत्ता हथियाने में सफल रही। यह कमियां थी- संकटकालीन स्थिति की घोषणा करने और आपातकालीन अधिकारों को प्राप्त करना, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के अधिकारों का स्पष्ट विभाजन नहीं, चुनाव की अनुपातिक प्रणाली आदि।

12. **हिटलर के कार्यों का जर्मन परंपरा के अनुसार होना:** हिटलर के कार्य जर्मन परंपराओं और आकांक्षाओं पर आधारित थे। जर्मन जनता वर्साय संधि की विरोधी थी ।अतः हिटलर ने भी उसका विरोध करना आरंभ किया ।जनता जनतंत्र को घृणा की दृष्टि से देखती थी तथा एकतंत्र के प्रति श्रद्धा रखती थी ।जर्मन जनता की इस आकांक्षा का लाभ उठाकर हिटलर ने जनतंत्र शासन की कटु आलोचना करनी आरंभ कर दी ।नात्सीवाद के मौलिक सिद्धांत भी उसने जर्मन परंपरा से लिए थे। **फिख्टे** वीर पूजा के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। **हीगल** ने राज्य के हित के लिए व्यक्ति के बलिदान को उचित माना था ।**फ्रेडरिक द्वितीय** सैनिक वाद का समर्थक था ।**नोबेलिस** शक्ति को ही अधिकार मानता था ।**मार्वित्स** यहूदी विरोधी था ।इस प्रकार हिटलर के विचार सैनिक -मनोवृति प्रधान जर्मन जाति की परंपरा तथा आकांक्षा के अनुकूल थे। यह उसके उत्कर्ष में सहायक बने।

To be continued

BY:Arun Kumar Rai
Asst.Professor
P.G.Dept.of History
Maharaja College,Ara.

Last modified: 06:01